सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 14 ▪ ▪ अंक : 10 ▪ ▪ 5 जनवरी 2018 ▪ ▪ मूल्य : 20रु. ▪

संघवी लेहरीदेवी लाधमलजी मरडिया

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, चितलवाना, जिला जालोर (राजस्थान)

SANGHVI LEHRIDEVI LADHMALJI MARDIA GOVERNMENT ADARSH SENIOR SECONDARY SCHOOL, CHITALWANA

लोकार्पण समारोह

शनिवार, 27 जनवरी 2018

पावन निश्रा

प.पू. मरुधरमणि खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

गुरु भगवंतों का मंगल प्रवेश एवं गणतंत्र समारोह
शुक्रवार, 26 जनवरी 2018

लोकार्पण समारोह एवं फलेचुंदड़ी (स्वामीवात्सल्य)
शनिवार, 27 जनवरी 2018

भावभरा आमंत्रण

उद्घाटनकर्ता
श्री अर्जुनरामजी मेघवाल
(केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री, भारत सरकार)

मुख्य अतिथि
श्री गुलाबचंदजी कटारिया
(गृहमंत्री, राजस्थान सरकार)

विशिष्ट अतिथि
श्री वासुदेवजी देवनानी
(शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार)

समारोह अध्यक्ष
श्री देवजी पटेल
(सांसद, जालोर-सिरोही)

निमंत्रक-संघवी लाधमलजी मावाजी मरडिया चैरिटेबल ट्रस्ट

Regd. Off.: 36/40, Hinglaj Bhavan, Room No. 14, 1st Floor, Kika Street, Gulalwadi, Mumbai-400 004
Email: sales@manidhariindia.com Mobile: +91 94602 30962 / 98922 33223
Chitalwana: Ladhani Bhawan, Chitalwana-303041, Dist. Jalore (Rajasthan) Mobile: 9322257009

सकल श्रीसंघ को
भावभरा ससम्मान आमंत्रण

दिनांक 21 फरवरी 2018 को बालोतरा में श्री केशरीनाथजी के मंदिर की
पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति **आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**
की शुभ निश्रा में भव्य प्रतिष्ठा निमित्ते हमारे परिवार को 18 फरवरी 2018 को शाम की
नवकारसी (स्वामीवात्सल्य) का लाभ प्राप्त हुआ है।
इस शुभ अवसर पर पधार कर हमें अनुग्रहित करें।

दिनांक 21 फरवरी 2018
को बालोतरा में
श्री केशरीयानाथजी के
मंदिर की
भव्य प्रतिष्ठा निमित्ते हमारे
परिवार को
17 फरवरी 2018 को
भैरव पूजन का लाभ प्राप्त हुआ है।
इस शुभ अवसर पर पधार
कर हमें अनुग्रहित करें।

संघवी अमृतलाल पुखराजजी कटारिया

संरक्षक	:	श्री नाकोड़ा तीर्थ पूर्णिमा पदयात्रा संघ भैरव सेवा समिति-बालोतरा, मुंबई
संस्थापक अध्यक्ष	:	श्री समस्त जैन कटारिया एवं कटारिया संघवी फाउण्डेशन, मुंबई
उपाध्यक्ष	:	श्री आर्य गुण गुरुकृपा जैन तीर्थ रामजी का गोल-बाड़मेर (राज.)
पूर्व उपाध्यक्ष	:	श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुंबई
उपाध्यक्ष	:	श्री बालोतरा जसोल प्रवासी संघ (रजि.), मुंबई
उपाध्यक्ष	:	श्री बालोतरा प्रति मंडल, मुंबई
फाउण्डर	:	ऑल इण्डिया कटारिया फाउण्डेशन (राजस्थान)
प्रतिष्ठान	:	महाभैरव मेटल इण्डस्ट्रीज-मुंबई

निवेदक

बालोतरा (राज.) निवासी पुखराज, देवीचंद, अनराज, भगवानचंद, अमृतालाल (मरुधर रत्न)
मोहनलाल, अशोककुमार, रमेशकुमार, मदनलाल, अशोककुमार, मुकेशकुमार, हीरालाल, ललितकुमार,
मुकेशकुमार, अरविंदकुमार, मनीषकुमार, दिलीपकुमार, किर्तीकुमार, दीपककुमार, आकश,
ऋषभ, निखिल, रोहित, स्मित, मोहिन, मोक्ष, ईशान, जनक, रिद्म, लवेश, जेनिश, रयांश, युवराज, नक्ष
बेटा-पोता हुकमीचंदजी मगनीरामजी समस्त कटारिया संघवी परिवार (गादेवीवाला)

बालोतरा हाल मुंबई

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुण्णं वियं जियं।
अयंपिर-मणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं।

– दशवैकालिक 6/21

आत्मार्थी दृष्ट का यथार्थ कथन करने वाली, परिमित, असंदिग्ध, परिपूर्ण, स्पष्ट, सहज, वाचालता रहित, और अन्य को उद्वेग न करने वाली भाषा बोले।

A person with self-control should speak exactly what he has seen. His speech should be to the point, unambiguous, clear, natural, free from prattle and causing no anxiety to others

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. गुरुदेव की कहानियां	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	05
3. ब्राह्मी	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	06
4. समाचार दर्शन	संकलन	08
5. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	22

पूज्यश्री के आगामी कार्यक्रम

- 21.1.18 जहाज मंदिर से विहार
- 26.1.18 चितलवाना प्रवेश
- 27.1.18 विद्यालय उद्घाटन
- 28.1.18 सांचोर प्रवेश
- 29.1.18 जिन मंदिर रजत जयंती
- 30.1.18 दादावाडी ध्वजा
- 02.2.18 गुडामालाणी प्रवेश
- 03.2.18 धोरीमन्ना प्रवेश
- 05.2.18 चौहटन प्रवेश
- 09.2.18 बाडमेर प्रवेश
- 17.2.18 अम्बे वेली बालोतरा प्रतिष्ठा
- 21.2.18 बालोतरा अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- 12.3.18 बिजयनगर अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- 19.4.18 जयपुर अंजनशलाका प्रतिष्ठा

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 14 अंक : 10 5 जनवरी 2018 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

नवप्रभात

प्राय: कोई भी व्यक्ति अपने वर्तमान जीवन से संतुष्ट नहीं हो पाता। वह सदा सदा विकल्पों में जीता है। यह वास्तविकता है कि व्यक्ति को संतुष्टि निर्णय की प्रक्रिया से नहीं, अपितु परिणाम से प्राप्त होती है। जबकि होना यह चाहिये कि संतुष्टि का आधार परिणाम नहीं, अपितु प्रक्रिया है। क्योंकि प्रक्रिया ही उसके हाथ में थी। परिणाम तो उसके हाथ में था नहीं।

फिर परिणाम के आधार पर क्यों अपने मन को राजी या नाराज करता है।

परिणाम उसके अनुकूल जब नहीं मिलता है तो व्यक्ति प्रक्रिया के संदर्भ में विचार करता है। और तब यह सोचता है कि ऐसा न कर वैसा किया होता तो अच्छा होता।

परिणाम समुचित मिलने पर भी मन विकल्पों से ग्रस्त रहता है। तब यह सोचता है कि यदि निर्णय वैसा किया होता तो परिणाम और अच्छा होता।

समस्या यह है कि कोई भी व्यक्ति एक ही समय में दो दिशाओं में एक साथ नहीं जा सकता। उसे किसी न किसी एक दिशा का चुनाव करना ही होता है।

मन की मुश्किल यह है कि जब वह उत्तर दिशा की ओर जा रहा होता है, तब सोचता है कि दक्षिण में जाता तो ठीक रहता। हाँलाकि यह सोचते हुए भी वह उत्तर की ओर ही जा रहा होता है।

मन जो दो नावों की सवारी करता है, वह उसे संतुष्टि नहीं लेने देता।

क्योंकि मन उधर है जिधर वो जा नहीं रहा।

और जिधर वह जा रहा है, उस दिशा में मन का पूरा साथ नहीं है। इस कारण न तो वह पूर्ण एकाग्र हो पाता है और न वह अपनी क्षमता व योग्यता का पूर्ण उपयोग कर पाता है। परिणाम उसे असंतुष्टि के रूप में प्राप्त होता है।

जीवन की सफलता का सूत्र है- निर्णय की प्रक्रिया बहुत सोच समझ कर तय करो... उसमें विकल्प उपस्थित मत करो...! तदुपरान्त परिणाम जो भी हो, उसमें पूर्ण संतुष्टि का अनुभव करो!

गुरुदेव की कहानियाँ

वरदान

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

सम्राट् अजितसेन नगर भ्रमण के लिये निकला था। अंधेरा ढल चुका था। नगर भ्रमण करते करते उसने एक अत्यन्त गरीब वृद्ध को देखा। वह बडी मुश्किल से अपना गुजारा चलाता था। दिन भर जंगल में घूम-घूम कर लकडियां एकत्र करता और सांझ उनका कोयला बना कर बाजार में बेचा करता था। दो समय की रोटी का प्रबंध बहुत मुश्किल से होता था।

जब सम्राट् को उसने अपने घर आता हुआ देखा तो अत्यन्त प्रसन्नता से भर कर सम्राट् का अतिथि सत्कार किया। अजितसेन का मन प्रसन्न हो गया। वह उसकी गरीबी को देख कर करूणा से भर गया। उसने उस वृद्ध गरीब को अमीर बनाने का निर्णय किया और चंदन का एक बाग उस व्यक्ति को भेंट कर दिया।

चार महिने बाद सम्राट् पुनः उधर से निकला तो अचानक उसे उस वृद्ध की याद आ गई। उसने सोचा कि वह व्यक्ति अब तो अत्यन्त अमीर हो गया होगा। झोंपडी के स्थान पर महल खडा कर दिया होगा। कोयला बनाने के बजाय उसने अन्य व्यापार कर लिया होगा।

जब सम्राट् उस व्यक्ति के पास पहुंचे तो दंग रह गये। वह व्यक्ति कोयला बना रहा था। झोंपडी वैसी की वैसी थी।

सम्राट् अचरज से भर उठा। उसने चकित होते हुए पूछा-भैया! यह क्या कर रहे हो! तुम्हें इतना बडा बगीचा दिया था चंदन का! तब भी तुम कोयला बना रहे हो।

उस वृद्ध ने जवाब दिया- उस बाग का ही तो कोयला है। सम्राट् की आंखें चौडी हो गई।

उसने पूछा -क्या! तुमने उन सब पेडों का कोयला बना दिया।

हाँ महाराज! आपने बाग दिया। मैंने उस बाग को जला दिया। उसका कोयला बना-कर बाजार में बेच रहा हूँ। और मैं बडा खुश हूँ। अब मुझे उतनी मेहनत जंगल में नहीं करनी पडती।

सम्राट् हैरान हो गये।

उन्होंने पूछा- उस बगीचे में से थोडी लकडी बची है क्या! वृद्ध ने कहा-हाँ महाराज! एक हाथ भर लकडी का टुकडा बचा है।

सम्राट् ने कहा- उसे लेकर बाजार में जाओ और बेच आओ! वह व्यक्ति लकडी के उस टुकडे को लेकर बाजार गया तो एक दुकानदार ने अत्यन्त खुश्बूदार उस चंदन के टुकडे को तुरंत खरीद लिया। और एक हजार मुद्राऐं उस व्यक्ति को अर्पण कर दी।

वह वृद्ध व्यक्ति तो चकित रह गया। हजार मुद्राओं को उसने कांपते हाथों से ग्रहण की और वापस राजा के सामने पहुँच कर रोते हुए कहने लगा-आपने मुझे इतना कीमती बाग दिया था और मैंने उसे कोयला बनाने में खर्च कर दिया। जब एक टुकडे के हजार रूपये प्राप्त हुए हैं तो पूरे बाग का कितना मूल्य होता!

महाराज! मुझ पर एक और कृपा करो। ऐसा एक बाग मुझे और दे दो।

सम्राट् ने कहा-भाग्य एक बार ही चमकता है। बार-बार वरदान नहीं मिला करता।

मनुष्य जीवन चंदन के बाग जैसा है। हमें राग द्वेष और सांसारिक भोग रूप कोयला बनाने में पूरा नहीं करना है, अपितु उसकी सुगन्ध से अपनी आत्मा का कल्याण करना है।

सोलह सतीयाँ कथानक 2

विलक्षण वैराग्यवती सती ब्राह्मी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे...)

नश्वर संसार का यह शाश्वत सत्य है। उदित सूर्य को शाम ढलते-ढलते अस्त होना ही होता है। फिर दादी की मृत्यु तो उनके लिये महोत्सव बन गयी। वास्तव में जीवन का अन्त इस प्रकार ही होना चाहिये कि कर्म नामशेष हो जाये।

मुझे भी ऐसी मृत्यु ही वांछनीय है। जीओ तो ऐसे जीओ कि मरने के बाद दुनिया में तुम्हारी याद सदा रहे। बाकी तो कीट-पतंग की तरह रोते-रोते मरना भी कोई मरना है।

दादी माँ के महानिधन ने ब्राह्मी को वैराग्यवती बना दिया। उसे तो बस एक ही काम्य था-परमात्मा का अनुग्रह। वह जानती थी कि यदि प्रभु की शरण मिल जाये तो मेरी मुक्ति की कामना जरूर पूरी होगी। मुक्ति पाने का इससे सरल, सहज और उत्तम मार्ग और कोई नहीं है।

इन्हीं सोचों में डूबी वह बाहुबली के पास पहुँची।

आओ ! ब्राह्मी ! बैठो !

विनयावनत प्रणाम कर ब्राह्मी बाहुबली के सामने बैठ गयी।

भैया! मैं आज एक आत्मिक निवेदन लेकर आयी हूँ। बहुत सम्भव है कि मेरी प्रार्थना तुम्हें प्रियकर प्रतीत न हो तथापि तुम्हें इस छोटी बहना को ध्यान से सुनना है। बाहुबली उदास थे। उनकी आँखों में पितामही के वियोग का दु:ख था।

भैया! जब से मैंने दादी माँ का हाथी के होदे पर बैठे-बैठे देहातीत अवस्था को प्राप्त होना देखा है, तब से मेरा मन इन महलों से ऊब गया है। मैं विरति के उपवन में प्रविष्ट होना चाहती हूँ। सुनकर बाहुबली को जैसे झटका लगा। उसने कब सोचा था कि मैं दादी माँ की वियोग-व्यथा भूल भी नहीं पाऊँगा, उससे पहले यह इस प्रकार संसार-त्याग की बात कहेगी।

मेरी प्रिय बहिन! तूं यह क्या कह रही है?अभी तो दादी माँ के विरह का जख्म भी नहीं भरा है, उससे पहले तूं एक और आघात पहुँचाना चाहती है। सरोष बाहुबली बोला, फिर भी ब्राह्मी का धैर्य पूर्ववत् था। वह जानती थी कि मोहग्रस्त जीवों की मानसिक स्थिति इसी प्रकार की होती है। उसने अत्यन्त प्रेम से बाहुबली के हाथ को अपने हाथ में लेते हुए कहा-भैया! यह सब मोह-राजा का खेल-तमाशा है। पर जो व्यक्ति सम्यक्तया परिस्थिति का आकलन करना जानते हैं, वे सुख की अति में न इतराते हैं, न दु:खों में घबराते हैं। फिर आप तो विवेकी एवं प्रज्ञावान् हैं। इस प्रकार मोहग्रस्त होकर विह्वल मत बनिये।

परन्तु मेरी बहिना! दीक्षा कोई हँसी-मजाक नहीं, जो आज ले ली और अच्छी नहीं लगी तो कल छोड़ दी। पात्र लेकर घर-घर घूमना, केश-लुंचन करना, परीषहों में समता की कसौटी पर खरा उतरना, विषयों को पराजित करना, ये कोई सामान्य बातें नहीं हैं।

परन्तु भैया! जिसने संयम को जीवन का संकल्प बना लिया है, जिसके हौंसले मजबूत हो और जिसने जन्म-मरण के कुचक्र को भेदने का पक्का मन कर लिया हो, उनके लिये उपसर्ग, कठोर चारित्र-पालन और जिनाज्ञा का अनुसरण, ये सब अत्यन्त सहज हो जाते हैं।

देखो ब्राह्मी! तुम राजमहल के सुखों में पली-बढ़ी हो। तेरी यह कोमल-काया संयम के कष्टों को नहीं सह पायेगी।

कहाँ राजसुखों की शीतल छाया और कहाँ चिलचिलाती धूप। कहाँ सुविधाओं का अम्बार और कहाँ परीषहों की लम्बी परम्परा। इसलिये मेरा कहना मानो। जल्दबाजी न करो। बाद में पछताने से कुछ भी नहीं होगा।

भैया! आप ये क्या कह रहे हैं! ऐसे शब्द आपके मुख से शोभा नहीं देते। हम सभी महावीर ऋषभ की संतान है, जो राजवैभव को तिनके की भाँति छोड़कर साधना के दुष्कर मार्ग पर चले हैं। जिन्होंने कभी भी हार नहीं मानी। कष्टों के सामने घुटने नहीं टेके।

अजेय बाहुबल और कमजोर दिल की बातें। नहीं....नहीं....! मेरा संकल्प सुदृढ़ है। उसमें परिवर्तन की कहीं कोई संभावना नहीं है। आपको हौंसला तोड़ने का नहीं, प्रत्युत बढ़ाने का काम करना चाहिये।

पर मेरा कहना है। जिस प्रकार पिताश्री ऋषभ संसार में रहे और बाद में दीक्षा ली। तुम भी संसार को सुखों को भोगो और बाद में दीक्षा लो ताकि तुम्हारे एक रोम में भी संसार की प्यास न रहे।

भैया! मैं संसार में कोई सुख नहीं मानती। दु:ख की महाग्नि में चारों तरफ जीव झुलस रहे हैं । जहाँ देखो, वहाँ स्वार्थ की गंदी नालियाँ बह रही हैं। राग-द्वेष के कारखानों की स्वार्थ की चिमनियों से केवल और केवल कषाय और मिथ्यात्व का धुआँ

निकल रहा है। अत: मुझे ऐसे सुख की कोई भूख नहीं है।

रही पिताश्री के दीक्षा की बात। उनका तो यह अन्तिम भव है। चरम शरीरी को भोगावली कर्म भोगने ही होते हैं और फिर पिताश्री ने इन भोगों में कभी भी सुख नहीं माना। वे तो संसार के पंक-सागर के मध्य भी कुमुद-पत्र की भाँति निर्लिप्त रहे। मैं आपसे कुछ नहीं चाहती। केवल संयम के उपवन में जाना चाहती हूँ और उसी में मेरा आनंद है। क्या आप बहिना की छोटी-सी बात नहीं मानोगे?

बाहुबली समझ गए-ब्राह्मी का संकल्प अटूट है। इसका वैराग्य ताश के पत्तों की भाँति सामान्य हवा से बिखरने वाला नहीं। क्या महासुमेरु कभी महाप्रलय के सामने झुका है?वह झुके तो ब्राह्मी का निर्णय बदले।

उसने प्रेम से उसके माथे पर हाथ फेरते हुए कहा-बहिना! तूंने जिस महापथ का चयन किया है, वह संपूर्ण इक्ष्वाकु परम्परा को उज्ज्वल करने वाला कदम है। यद्यपि मोहवश मेरा मन तुझे वनों में विचरण करने की आज्ञा नहीं देता तथापि तेरा फौलादी संकल्प देखकर तुझे रोक पाना अत्यंत दुष्कर है।

(क्रमश:)

प्रकाश फाउंडेशन द्वारा सोहम डागा का सत्कार समारोह

मुंबई। प्रतिभाए किसी परिचय का मोहताज नहीं होता वे अपनी सफलता का रास्ता स्वयं चुन लेती है। ऐसी ही एक प्रतिभा का नाम है सोहम डागा। सोहम डागा को अमेरिकी कांग्रेस द्वारा सर्वोच्च पुरस्कार (सिवीलीयन अवार्ड) के स्वर्ण पदक से नवाजा गया है। सोने में सुहागा के रूप में सोसायटी आफ साईंस अमेरिका द्वारा उनकी अद्‌भूत उपलब्धियो हेतु एक ग्रह का नाम भी उनके नाम पर रखा गया है। उनकी इस शानदान उपलब्धि पर प्रकाश फाउंडेशन द्वारा सत्कार समारोह का आयोजन विक्टोरीया ब्लाईंड स्कुल, ताड़देव, मुंबई में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि महाराष्ट्र सरकार के कैबिनेट मंत्री राज के, पुरोहित, अभय फिरोदीया (चेयरमेन-विरायतन), शांतिलाल कवाड़ (प्रेसिडेंट-जीतो अपेक्ष) थे। प्रकाश सी. कानुंगो एवं संजय लोढ़ा (चेयरमेन-जीतो इंटरनेशनल वींग) के संयोजन में संपन्न हुये इस समारोह में सभी वक्ताओं ने सोहम डागा को बधाई एवं मंगल आशीर्वाद देते हुए कहा कि सोहम डागा ने देश ही नहीं विदेश में भी अपने परिवार एवं जैन समाज का नाम रोशन किया है। इनका सत्कार हमारे लिए गौरवशाली क्षण है। ज्ञात रहे कि सोहम डागा के दादाजी तनसुखराज डागा जैन समाज के अग्रणी उद्योगपति होने के साथ-साथ विरायतन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। समारोह में सोहम डागा ने बताया कि वे 35 वर्ष की उम्र में देश लौटकर अपनी कमाई का हिस्सा सेवा हेतु लगाकर विरायतन के उत्थान हेतु अपना पूरा समय देंगे। इस अवसर पर प्रकाश फाउंडेशन के हेमंत कानुंगो द्वारा सोहम डागा को शॉल एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में संजय लोढ़ा ने प्रश्नोत्तरी से सोहम डागा से सवाल जबाब किये। जिसका सोहम डागा ने सुंदर ढंग से उत्तर देते हुए सदन को अपनी उपलब्धियों एवं आगामी योजनाओं की जानकारी दी। समारोह में जीतो अपेक्स के ट्रेजरार धीरज कोठारी, जीतो के डायरेक्टर मनोहर कानुंगो, रांका फॅमिली फाउंडेशन के चेयरमेन एच.एस. रांका, सुमन बच्छावत, विरायतन के सुंदरजी भाई, जीतो के हितेश गोलछा, शताब्दी गौरव के सिद्धराज लोढ़ा सहित डागा परिवार के सभी सदस्यगण उपस्थित थे।

चार पुस्तकों का विमोचन

श्री नाकोडाजी तीर्थ की पावन भूमि पर शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई परिवार द्वारा आयोजित सिणधरी से नाकोडाजी छह री पालित संघ माला के पावन अवसर पर चार पुस्तकों का विमोचन किया गया।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री द्वारा रची गई श्री गौतम स्वामी पूजा नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। इस पुस्तक के विमोचन का लाभ श्रीमती खमादेवी वनेचंदजी मंडोवरा परिवार सिणधरी वालों द्वारा लिया गया।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य द्वारा रचित वीतराग स्तोत्र के पूर्वार्ध 10 प्रकाशों का विवेचन करते हुए ग्रन्थ लिखा है। इसके विमोचन का लाभ श्री गुलाबचंदजी शांतिलालजी लूणिया परिवार शेरगढ वालों ने लिया।

पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. द्वारा संकलित स्मरण वाटिका नामक पुस्तक के विमोचन का लाभ श्री मूलचंदजी भैरचंदजी मुणोत डंडाली वालों ने लिया।

पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. द्वारा लिखित जहाज मंदिर के आचार्य पद विशेषांक के विमोचन का लाभ श्री भंवरलालजी नेनमलजी मुणोत परिवार डंडाली वालों ने लिया।

समाचार दर्शन

न्यूज

1700 यात्रियों का सिणधरी से नाकोडाजी संघ का भव्य आयोजन

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 6 एवं पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री विज्ञांजनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. महत्तरा पद विभूषिता समुदायाध्यक्षा श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री जयरत्नाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री नूतनप्रियाश्रीजी म. एवं पू. साध्वी श्री मुक्तांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 के पावन सानिध्य में सिणधरी नगर से श्री नाकोडाजी तीर्थ छह री पालित पद यात्राा संघ का भव्य आयोजन संपन्न हुआ।

1700 यात्रियों के इस संघ का भव्य आयोजन सिणधरी निवासी श्री भीकचंदजी धनराजजी देसाई परिवार द्वारा किया गया।

ता. 23 दिसम्बर को शुभ मुहूर्त्त में संघ का प्रयाण हुआ। ता. 28 को नाकोडाजी तीर्थ में भव्य प्रवेश हुआ। परमात्मा की भक्ति की गई। संघपति परिवार द्वारा रत्नजटित स्वर्णहार पार्श्वनाथ परमात्मा एवं नाकोडा भैरव देव को अर्पण किया गया। प्रवेश समारोह में पूज्य आचार्य श्री कीर्तिचन्द्रसूरिजी म. पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री प्रद्युम्नविमलसूरिजी म. आदि का पदार्पण हुआ। दोपहर में 155 जोडों से नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव महापूजन पढाया गया। यह महापूजन यतिवर डॉ. श्री वसंतविजयजी म. ने विशिष्ट मंत्राोच्चारणों से पढाया।

ता. 29 दिसम्बर को माला विधान हुआ। चतुर्विध संघ की साक्षी से संघपति पद प्रदान किया गया। श्री भीकचंदजी देसाई को संघवी शा. मिश्रीमलजी प्रभुलालजी देसाई परिवार, सिणधरी वालों ने, श्रीमती सुआदेवी देसाई को संघवी शा. रामलालजी वनेचंदजी हरणेशा परिवार, सिणधरी वालों ने, शा. धनराजजी देसाई को शा. देवीचंदजी शांतिलालजी लूणिया परिवार शेरगढ़ ने, श्रीमती उत्तमदेवी देसाई को शा. देवीचंदजी शांतिलालजी लूणिया परिवार शेरगढ़ ने माला परिधन करने का लाभ प्राप्त किया।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने नाकोडाजी तीर्थ का इतिहास विस्तार से बताते हुए तीर्थ संस्थापक आचार्य प्रवर श्री जिनकीर्तिरत्नसूरिजी म. की घटनाऐं सुनाई। पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने इस अवसर पर संघ की महिमा बताई।

इस प्रकार नाकोडाजी तीर्थ में इतने विशाल संघ के प्रथम बार आने का भव्य इतिहास रचा गया।

पूज्यश्री का अपनी जन्मभूमि मोकलसर में प्रवेश

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 3 एवं पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 का ता. 4 जनवरी 2018 को मोकलसर नगर में भव्यातिभव्य नगर प्रवेश हुआ।

आचार्य पद ग्रहण करने के पश्चात् प्रथम बार पूज्यश्री का अपनी जन्मभूमि में पदार्पण हुआ। मोकलसर गांव के प्रवासी बडी संख्या में पधारे।

दादावाडी से भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। दो वर्षों तक भोजनशाला के लाभार्थी श्री मूलचंदजी हुण्डिया परिवार द्वारा उद्घाटन किया गया।

महावीर भवन में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्यश्री ने अपनी माताजी, गुरुदेवश्री एवं जन्मभूमि का उपकार माना।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने विरति धर्म की महिमा की। पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने पूज्यश्री के जीवन को पूर्ण सफल बताते हुए जीवन को सफल बनाना या जीवन में सफलता पाना, इन दो वाक्यों की व्याख्या की। पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. ने गुरु गुण गीतिका प्रस्तुत की।

पूज्यश्री को कामली वहोराने का लाभ श्री मूलचंदजी हुण्डिया परिवार ने तथा गुरु पूजन का लाभ पूज्यश्री के सांसारिक ननिहाल पक्ष श्रीमती जडावीदेवी कपूरचंदजी पालरेचा परिवार ने लिया।

इस अवसर पर संघवी तेजराजजी गुलेच्छा, भंवरलालजी गुलेच्छा, रमेश लूंकड, अशोक पालरेचा, सौ. रेणु पालरेचा आदि ने अपने भाव प्रस्तुत किये। संचालन संतोकचंदजी श्रीश्रीमाल ने किया।

बाद में पूज्यश्री के सांसारिक परिवार श्री बाबुलालजी रमेशकुमारजी लूंकड एवं ननिहाल परिवार श्रीमती जडावी देवी कपूरचंदजी पालरेचा के घर संघ सहित पगले किये गये। श्री मूलचंदजी हुण्डिया परिवार में भी पगले किये गये।

सिवाना में खरतरगच्छ जैन भवन का उद्घाटन

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव वर्तमान गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 3 एवं पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 का ता. 3 जनवरी 2018 को सिवाना नगर में भव्यातिभव्य नगर प्रवेश हुआ।

शोभायात्रा का प्रारंभ उम्मेदपुरा मंदिर से हुआ। चौमुखजी मंदिर, गोडीजी मंदिर, शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर व दादावाडी, ललवानी दादावाडी दर्शन करते हुए तथा लाभार्थी चौपडा व ललवानी परिवार के यहॉ पगले करते हुए खरतरगच्छ जैन भवन पधारे। जहॉ पूज्यश्री की निश्रा में नवनिर्मित इस भवन का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन का लाभ श्री सुमेरमलजी प्रकाशजी चौपडा परिवार सिवाना–कोट्टूर ने लिया।

न्याति नोहरा में बहुमान व प्रवचन का आयोजन किया गया।

पूज्यश्री ने फरमाया– हमारा जीवन संज्ञाप्रधान है, इसे आज्ञाप्रधान बनाना है। जीवन परमात्मा की आज्ञा के अनुसार हो, ऐसा हमारे हृदय में निश्चय होना चाहिये।

इस अवसर पर लाभार्थी परिवारों का बहुमान किया गया। संघवी वंसराजजी भंसाली, मोतीलालजी ललवानी आदि ने अपने उद्गार व्यक्त किये।

इस भवन के निर्माण में संघ के अध्यक्ष श्री मोतीलालजी ललवानी के पुरूषार्थ की अनुमोदना की गई। संचालन मुकेश चौपडा ने किया।

सेतरावा जिन मंदिर का जीर्णोद्धार होगा

प्राचीन नगर सेतरावा जो जोधपुर जिले में स्थित है। वहाँ स्थित 800 वर्ष प्राचीन श्री आदिनाथ जिन मंदिर का जीर्णोद्धार पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत गच्छाधिपति श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न होगा। साथ ही चौथे दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठित प्राचीन दादावाडी का जीर्णोद्धार भी बिना उत्थापन किये पूज्यश्री की निश्रा में संपन्न होगा। पूज्यश्री के विहार कर सेतरावा पधारने पर श्री संघ द्वारा भव्य स्वागत किया गया। प्रवचन का भव्य आयोजन हुआ। बाहर से बडी संख्या में अतिथिगणों का पधारना हुआ। प्रवचन के पश्चात् सकल श्री संघ की बैठक संपन्न हुई, जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय किया गया। तथा श्री संघ की कमेटी बनाई गई। श्री अनोपचंदजी लोढा को अध्यक्ष, श्री भंवरलालजी लोढा को उपाध्यक्ष, श्री झूमरलालजी लोढा को मंत्री, श्री जसराजजी लोढा को कोषाध्यक्ष तथा श्री पारसमलजी लोढा व पुखराजजी गुलेच्छा को सहकोषाध्यक्ष बनाया गया। इस कमेटी में श्री रावलचंदजी लोढा, श्री रावलचंदजी टी. लोढा, श्री मंगलचंदजी नवलखा, श्री कस्तूरचंदजी संचेती, श्री देवीचंदजी दुगड, श्री लालचंदजी एम. गुलेच्छा, श्री पुखराजजी गुलेच्छा, श्री देवीचंदजी सुराणा, श्री मूलचंदजी गुलेच्छा, श्री शांतिलालजी लोढा को सदस्य बनाया गया। उसी समय सदस्यों ने अपनी ओर से अर्थ सहयोग की घोषणा की।

संघवी लाधमलजी मावाजी मरडिया चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा निर्मित

स्कूल भवन का लोकार्पण 27 जनवरी को

चितलवाना। संघवी लाधमलजी मावाजी मरडिया चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा निर्मित संघवी लेहरीदेवी लाधमलजी मरडिया राजकीय आदर्श सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, चितलवाना का लोकार्पण 27 जनवरी को होगा। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, राजस्थान के गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, राजस्थान सरकार के शिक्षा मंत्री वासुदेव देवनानी एवं समारोह अध्यक्ष के रुप में सांसद देवजी पटेल उपस्थित रहेंगे।

निर्माता परिवार के संघवी मुकेश मरडिया ने बताया कि स्व. श्री लाधमलजी मरडिया की शिक्षा के प्रति प्रेम की भावना को फली भूत करने के लिए उनके सुपुत्र बाबुलालजी, शान्तिलालजी एवं भंवरलालजी ने 1990 में अपने द्वारा क्रय की

गई कृषि भूमि को विद्यालय भवन हेतु दान देने और उस पर विद्यालय भवन निर्माण कराने का संकल्प लिया। हर्ष की बात यह है कि 34 वर्ष पूर्व जो सपना श्री लाधमलजी संजोया था, वह उनके सुपुत्रों एवं सुपौत्रों के प्रयासों से आज पूरा होने जा रहा है और चितलवाना नगर में एक ऐसे अनुपम विद्यालय का निर्माण हुआ है, जिसमें न केवल अध्ययनरत बालकों को शैक्षिक सुविधा मिलेगी, अपितु इस विशाल और भव्य भवन में पढ़ाई करने का एक अलग ही एहसास होगा। 30 बड़े कमरों के साथ ही प्रयोगशाला, कम्प्युटर कक्ष, वाचनालय आदि की सुविधाओं से सुसज्जित इस विद्यालय भवन में जल संरक्षण और पर्यावरण की भी रक्षा होगा। सुरक्षा की दृष्टि से सीसी टीवी कैमरों की आधुनिक तकनीक को भी अपनाया जा रहा है। अग्निशमन यंत्रों की भी व्यवस्था की जा रही है।

उल्लेखनीय है कि ये सुविधायें सामान्यतया सरकारी विद्यालयों या ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में कहीं नहीं देखने को मिलती। एक छोटे से तहसील स्तर के कस्बे में इस प्रकार का भव्य विद्यालय भवन सचमुच में शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसा महत्वपूर्ण आयाम है, जिसमें 1200 से भी अधिक विद्यार्थी प्रति वर्ष पढ़-लिखकर अपना भविष्य संजोयेंगे।

नेपाल की राजधानी काठमांडू में साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 का मंगल प्रवेश

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती प.पू. गुणिनीपद विभूषिता, पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या प.पू. विदुषी समतामूर्ति प्रियस्मिताश्रीजी म.सा., प.पू. डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 का 18 जनवरी 2018 को मंगल प्रवेश हुआ। मंगल प्रवेश पर मूर्ति पूजक संघ के अध्यक्ष श्री विमलजी राखेचा, सुशीलजी सेठिया, विपुलभाई, जैन महिला मंडल आदि की उपस्थिति रही। प्रात: सुशीलजी सेठिया के निवास स्थान से मंगल गीत गाते हुए सुषमाजी गुलाब देवी आदि महिला मंडल ने प्रवेश कराया। संतोषजी ललवाणी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

– सुबोधभाई अध्यक्ष, कानपुर

श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथाय नमः श्री महावीरस्वामिने नमः
अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः
श्री नाकोड़ा भैरवाय नमः

श्री बिजयनगर नगरे

श्री नाकोडा पार्श्वनाथ जिन मंदिर की भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा

महोत्सव निमित्ते

सकल श्रीसंघ को भावभरा ससम्मान आमंत्रण

❖ पावन निश्रा ❖
पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति
आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
आदि ठाणा

❖ प्रेरणा ❖
पूजनीय बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या
पूजनीया साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा.

समारोह प्रारंभ
चैत्र वदि 7 गुरुवार
ता. 8 मार्च 2018

भव्य शोभायात्रा
चैत्र वदि 9 रविवार
ता. 11 मार्च 2018

प्रतिष्ठा
चैत्र वदि 10 सोमवार
ता. 12 मार्च 2018

प्रतिष्ठा के इस पावन अवसर पर सकल श्री संघ से पधारने का हमारा हार्दिक अनुरोध है।

● महोत्सव स्थल ●

श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव मंदिर

राजदरबार सिटी, एन. एच. 79, 27 मील चौराहा के पास, पो. बिजयनगर, जिला-अजमेर (राज.)

● निवेदक ●

योगेन्द्रराज सिंघवी, अध्यक्ष, ✦ पवन बोरदिया, मंत्री ✦ पुखराज डांगी, कोषाध्यक्ष

श्री नाकोडा पार्श्वनाथ भैरव मंदिर ट्रस्ट, बिजयनगर जिला अजमेर (राज.)

जहाज मन्दिर मांडवला में आयोजित द्वितीय वांचना शिविर

सिणधरी से नाकोड़ाजी भव्य संघ का आयोजन

सिणधरी से संघ का भव्य प्रस्थान

पू. बहिन म. आदि का नगर प्रवेश

अम्बे वेली मंदिर की प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त अर्पण

संघवी भीकचंदजी आशीर्वाद लेते हुए

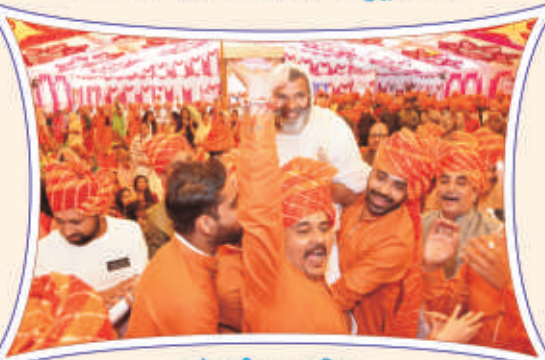

संघ की गुरु भक्ति

पू. साध्वी मंडल के दर्शन करता संघवी परिवार

महापूजन पढाते यतिवर श्री वसंतविजयजी

भैरव महापूजन

सिणधरी से नाकोड़ाजी भव्य संघ का आयोजन

चित्तौड प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त अर्पण

सूरत प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त अर्पण

पूज्यश्री के साथ संघवी देसाई परिवार

बहिन म. का उद्‌बोधन

वीतराग स्तोत्र का विमोचन

संघवी परिवार की बहिनों के साथ बहिन म.

तीर्थ माला की विधि करते संघवी परिवार

संघवी धनराजजी देसाई उद्‌गार व्यक्त करते हुए

कुशल वाटिका की पंचम वर्षगांठ २० जनवरी को

बाड़मेर। राष्ट्रीय राजमार्ग-15 बाडमेर अहमदाबाद रोड पर स्थित कुशल वाटिका प्रांगण में भगवान मुनिसुव्रत स्वामी जिन मन्दिर, दादावाड़ी, नवग्रह मन्दिर, देवी-देव मन्दिर एवं गुरु मन्दिर की पंचम वर्षगाठ 20 जनवरी को मनायी जायेगी।

कुशल वाटिका ट्रस्ट के अध्यक्ष भंवरलाल छाजेड व प्रचारमंत्री केवलचन्द छाजेड ने बताया कि परम पूज्या डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म. सा. की प्ररेणा से प्रवर्त्तिनी प्रमोद श्रीजी म.सा. की स्मृति में बनी कुशल वाटिका के नौ मन्दिरो की पंचम वर्षगांठ परम पूज्य खरतगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञा से परम पूज्या साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में प्रात: 8.00 बजे अठारह अभिषेक, प्रात: 9.00 बजे सतरह भेदी पूजा, प्रात: 10.00 बजे शिखर पर लाभार्थी परिवारो द्वारा मंत्रोच्चार के साथ ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न होगा। कार्यक्रम के बाद धर्मसभा एवं स्वामीवात्सल्य का आयोजन होगा। कुशल वाटिका ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष बाबूलाल टी. बोथरा ने बताया कि पंचम वर्षगांठ के उपलक्ष में जिन मन्दिरो को रंगीन रोशनी व फूलो द्वारा सजाया जायेगा। वर्षगांठ कार्यक्रम में आस-पास के क्षेत्रो सहित भारतभर से गुरुभक्त शिरकत करेगे। बोथरा ने बताया कि कुशल वाटिका ट्रस्ट की बैठक प.पू. साध्वी विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. की निश्रा व अध्यक्ष भंवरलाल छाजेड़ की अध्यक्षता में 20 जनवरी को दोपहर 4 बजे कार्यालय में आयोजित होगी।

स्कूल का उद्घाटन

- स्वर्गीय श्री लाधमलजी मावाजी मरडीया ठिकाणा चितलवाना में कामदार साहब थे, उनकी धर्मपत्नी लेहरादेवी मेरे दाता श्री राव गणपतसिंह जी की धर्म-बहन थी।

स्वर्गीय लाधमल जी बहुत सुलझे विचारों वाले सुसंस्कारित व्यक्ति थे, उनकी शिक्षा के प्रति बहुत सकारात्मक सोच थी। लाधमलजी कहते थे कि आप ठिकानेदार तो आपके बच्चों को जोधपुर, अजमेर, आबु भेजकर पढ़ा लेते है, लेकिन चितलवाना के आम निवासी अपने लड़के-लड़कियों को संसाधन की कमी की वजह से शिक्षा नहीं दिलवा पाते हैं। अत: उन्होंने अपने तीनों पुत्रों श्री बाबूलालजी, शांतिलालजी, भँवरलालजी को संकल्प दिलाया कि ग्राम चितलवाना में एक बहुत ही अच्छी सभी संसाधनों से पूर्ण उच्च माध्यमिक स्कूल बनाकर भेंट करना। इसी के परिणाम स्वरूप लाधमलजी परिवार यह स्कूल बनाकर ग्राम चितलवाना को दिनांक 27.01.2018 को लोकार्पित कर रहे हैं

कुंवर रघुवीरसिंह चितलवाना

- ट्रस्ट से स्कूल तो हजारो खुली है, पर उस स्कूल को दान देने वाले बहुत कम मिलेंगे, अपने पैसे का सदउपयोग बहुत करते है, पर उससे फायदा उठाने वाले बहुत मिलेंगे, लेकिन एक बात देखने को मिली है कि चितलवाना में मरडिया परिवार ने अपने खर्च से स्कूल बनवाया है।

परम् पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य जिनमणिप्रभसूरीजी म.सा. से उद्घाटन करवा के इस स्कूल को राजस्थान शिक्षा विभाग को दान करने जा रहे है। 26 जनवरी ओर 27 जनवरी को, खुद राजस्थान की मुख्यमंत्री ने इस दान की तारीफ के साथ अनुमोदना की है। मरडिया परिवार शुरू से ही गुरु भक्तों का परिवार रहा है दादा गुरुदेव की कृपा इन पर सदैव बनी हुई है अपनी लक्ष्मी का सद्उपयोग इन्होंने ज्ञान के क्षेत्र में किया और अपने गाँव के बच्चो के लिए एक बहुत ही सुंदर स्कूल बनवा कर दी है। ऐसे प्रेरक कार्य करके आपने जिन शाशन में अपना नाम रोशन कर दिया है दादा गुरुदेव आपके परिवार को आने वाले वर्षों में जिन शाशन की सेवा के लिए ओर प्रेरित करे और आपकी सेवा के प्रेरणा पुरे जिन शासन को मिले यही शुभकामना!

सचिन पारख

के युप प्रचार, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद

द्वितीय वांचना शिविर संपन्न

ता. 1 जनवरी 18 को खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिन मणिप्रभसूरि का जहाज मंदिर माँडवला मे प्रवेश संपन्न हुआ।

पूज्य आचार्य श्री खरतरगच्छाधिपति पर लेकर पहली बार जहाज मंदिर पधार रहे थे अत: जहाज मंदिर एवं गाँव को दुल्हन की तरह सजाया गया था साथ ही आज खरतरगच्छ युवा परिषद् द्वारा द्वितीय वांचना शिविर भी प्रारंभ हो रहा था।

गुरुदेव सर्वप्रथम मांडवला गाँव में पधारे। वहाँ धर्मसभा में गुरुदेव श्री का स्वागत करते हुए गाँव की ओर से श्री मांगीलालजी भंडारी ने कहा- पूज्य आचार्य श्री का हमारे संघ पर बहुत उपकार है। आपकी दीर्घदृष्टि से ही हमें जहाज मंदिर जैसा भव्य आयोजन प्राप्त हुआ है संघ की और से 10 रूपये का संघपूजन किया गया।

वहाँ से प्रवेश का भव्य वरघोड़ा जहाज मंदिर की ओर रवाना हुआ। तीर्थ स्थल पर पधारे हुए सभी ट्रस्टीगणों ने गुरुदेव का भव्य सामैया किया।

सभी परमात्मा के दर्शन करके शांति कांति मणि वाटिका में पहुँचे। सामूहिक वंदन एवं गुरुदेव द्वारा मंगलाचरण के पश्चात् शिविर का विधिवत उद्घाटन द्वीप प्रज्जवलन द्वारा किया गया।

केयुप की गीतिका ने उपस्थित हर व्यक्ति को समर्पण के भावों से भर दिया।

केयुप के मंत्री श्री रमेश लुंकड ने शिविर की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा- हमारा जीवन सस्कार सेवा एवं समर्पण से आगे बढे। युवाओं में नैतिक जीवन के लिये उत्कंठा बढे इसीलिये गुरुदेव के निर्देशन में प्रतिवर्ष वांचना शिविर का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष शिविर का आयोजन शासन गौरव पुण्यशाली श्रावक श्री मोतीलालजी झाबक की ओर से हो रहा है।

बहिन म. डा. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी ने जहाज मंदिर की पृष्ठभूमि बताते हुए कहा- आचार्य श्री जिन कांतिसागरसूरि की कृपा से ही हमारा जीवन संयममय बना है। उनकी ही कृपा से हमें ज्ञान की रोशनी प्राप्त हुई है। इस स्थान पर उनका अग्नि संस्कार हुआ था अत: यह भूमि हमारे लिये तीर्थ है। उन्होंने गुरुदेव से संबंधित संस्मरण सुनाकर पूरी सभा को भावविभोर कर दिया।

पूज्य गुरुदेव जिनमणिप्रभसूरिजी ने इस भूमि को वंदनीय बताते हए कहा-इस भौतिक दुनियादारी में हम अपना आत्मधर्म, परिवार के प्रति कर्त्तव्य, समाज समर्पण एवं राष्ट्रनिष्ठा भूल गये है। शिविर इन सबको सीखाने का माध्यम है।

भोजन के बाद दोपहर के सत्र में मुनि मनितप्रभजी, साध्वी डा. नीलांजना, साध्वी विज्ञांजना श्री जी की बारह व्रत कर्मग्रन्थ एवं षड़ावश्यक पर कक्षाऐं शुरू हुई। शिविरार्थी इस जैन जीवन शैली को पाकर प्रसन्न थे।

तीसरे दिन दोपहर में शिविर का समापन समारोह था। लाभार्थी श्री मोतीलालजी झाबक का भव्य एवं भावभरा अभिनंदन केयुप द्वरा किया गया। पू. गुरुदेव श्री ने झाबक जी अनुमोदना करते हुए कहा-वे जीवन के नो दशक पूरे करके भी संपूर्ण स्वस्थ व युवा हैं। आपके नेतृत्व में हमारा संघ निरंतर गति कर रहा है। ज्ञान का समर्पण आपमें विशेष और इसी कारण आप छत्तीसगढ से मारवाड में लाभ लेने पधारे है।

श्री मोतीलालजी ने कहा- शिविर आज ज्यादा जरूरी है। ज्ञान के अभाव में हमारे बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो रहा हैं। अगले शिविर का लाभ भी मुझे ही मिले।केयुप ने जहाज मंदिर ट्रस्ट का भावभरा अभिनंदन किया।

इसी के साथ समस्त शिविरार्थी वर्ग का चांदी के सिक्के द्वारा बहुमान किया गया।

शिविर के संयोजक श्री प्रकाशजी छाजेड ने समस्त सहयोगियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस शिविर में भाग लेने के लिये बाडमेर, सांचोर, जोधपुर, रायपुर, दुर्ग, मोकलसर, अहमदाबाद, उदयपुर, बालोतरा, बीकानेर, जालोर, मांडवला, उम्मेदाबाद आदि क्षेत्रों से जिज्ञासुवर्ग का आगमन हुआ।

केयुप मुंबई शाखा द्वारा सोहम डागा का सम्मान

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् मुंबई शाखा द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त श्री सोहम डागा का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। श्री सोहम डागा को हाल ही में अमेरिकी कांग्रेस द्वारा सर्वोच्च सिविलियन अवार्ड के स्वर्ण पदक से नवाजा गया है। आपकी उपलब्धियों के मद्देनजर अमेरिकन सोसाइटी ऑफ साइंस ने एक ग्रह का नामकरण आपके नाम पर किया है जो विशेष अनुमोदनीय है। प.पू साध्वीजी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की शुभ निश्रा में आयोजित इस सम्मान समारोह में विविध क्षेत्र की कई गणमान्य व्यक्तियों की सादर उपस्थिति रही जिनमें JITO इंटरनेशनल के चेयरमैन संजयजी लोढ़ा, प्रकाशजी कानूगो, केयुप के राष्ट्रिय सचिव प्रदीपजी जैन, राष्ट्रिय संयोजक (प्रचार प्रसार) धनपतजी कानुंगो, खरतरगच्छ महिला परिषद् की राष्ट्रिय चेयरमैन श्रीमती पुष्पाजी जैन, मुंबई खरतरगच्छ संघ के पूर्व अध्यक्ष मांगीलालजी शाह, हितेशजी गोलछा आदि ने अपनी उपस्थिति प्रदान कर कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

इस अवसर पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद-पत्र का वांचन किया गया।

इस अवसर पर केयुप मुंबई शाखा के अध्यक्ष चम्पालाल वाघेला ने श्री सोहम डागा का परिचय देते हुए बताया कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी सोहम सप्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री तनसुखराजजी डागा के सुपौत्र है। सचिव महेन्द्र जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

– रिषभ कानुंगो, मुंबई

चित्तौड नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 6 मई को

परम पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में चित्तौड व सूरत नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया गया।

चित्तौड के श्री नाकोडा पार्श्वनाथ मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री कन्हैयालालजी महात्मा, जीवराजजी खटोड आदि सदस्यों ने जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराने हेतु विनंती की तथा मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने वि. सं. 2075 प्रथम ज्येष्ठ वदि 6 रविवार ता. 6 मई 2018 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। जिसे श्रवण कर सकल श्री संघ में हर्षोल्लास छा गया।

सूरत पाल कुशल वाटिका में अंजनशलाका प्रतिष्ठा 16 जून को

सूरत नगर में पाल क्षेत्र में कुशल वाटिका परिसर में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी का भव्य निर्माण चल रहा है। जिन मंदिर का लाभ श्रीमती खमादेवी वनेचंदजी मंडोवरा परिवार सिणधरी वालों ने तथा दादावाडी का लाभ डंडाली निवासी श्री भंवरलालजी नेनमलजी मुणोत परिवार डंडाली वालों ने लिया है।

लाभार्थी परिवार तथा कुशल वाटिका श्री संघ की ओर से पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. से अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराने व शुभ मुहूर्त्त प्रदान करने की भावभीनी विनंती की गई।

पूज्यश्री ने स्वीकार कर द्वितीय ज्येष्ठ सुदि 2 शनिवार ता. 16 जून 2018 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। सकल श्री संघ ने इसे अहोभाव के साथ हर्ष ध्वनि का तुमुल घोष करते हुए बधाया।

केयुप केलेण्डर-2018 का विमोचन

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् केयुप द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भव्य केलेण्डर का प्रकाशन किया गया है। इस केलेण्डर की थीम खरतरगच्छ के एक हजार वर्ष पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में दादा गुरुदेव के चित्रों वाली ली गई है। इस केलेण्डर का विमोचन 29 दिसम्बर 2017 को नाकोडाजी तीर्थ में संघ माला के अवसर पर संघपति देसाई परिवार एवं केयुप सदस्यों द्वारा किया गया।

प्रेषक, जहाज मंदिर परिवार

चौहटन से ब्रह्मसर संघ का भव्य आयोजन

पांडवों की तपोभूमि धर्मधरा चौहटन से 21 दिसंबर को परम पूज्य गुरुदेव वशीमलाणी रत्न शिरोमणी ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागर जी म.सा. एवं बालमुनि नयज्ञ सागर जी म.सा एवं विशाल साध्वी समुदाय आदि ठाणा 39 की पावन निश्रा में रवाना हुआ पदयात्रा संघ रामसर सियाणी वशीमालाणी क्षेत्र जैसलमेर अमरसागर लौद्रवा तीर्थ की स्पर्शना करता हुआ जिनशासन के संदेश एवं धर्म की प्रभावना फैलाता हुआ 8 जनवरी को लौद्रवा तीर्थ से अपने अंतिम पड़ाव की ओर अग्रसर हुआ।

ब्रह्मसर गांव में हुआ भव्य सामैया एवं स्वागत : स्वरूपचंद बागचार ने बताया कि पदयात्रा संघ एवं गुरुदेव के ब्रह्मसर नगरी आगमन होने पर जैन श्री संघ ब्रह्मसर एवं जैनेतर समुदाय द्वारा भव्य सामैया द्वारा स्वागत किया गया।

भव्य शोभायात्रा : ब्रह्मसर गांव में स्थित भगवान जगवल्लभ पार्श्वनाथ के दर्शन एवं गुरुदेव के उद्‌बोधन के पश्चात पदयात्रियों एवं बाहर से पधारे हुये गुरुभक्तों के साथ संघ ने संगीतमय प्रस्तुतियों हाथी, घोडों, रथ एवं जयघोष के साथ शोभायात्रा के रूप में ब्रह्मसर गांव से कुशलधाम के लिये प्रयाण किया.... जगह जगह पर गुरुभक्तों द्वारा गुरु के प्रति अपने भावों को झूमकर प्रकट किया गया। शोभायात्रा में हाथी की सवारी का लाभ ज्ञानचंद जी डुंगरवाल देवड़ा परिवार ने लिया। वरघोड़े का जगह जगह पर ड्रोन द्वारा पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया।

कुशलधाम में हुआ भव्य प्रवेश : लगभग 3 कि.मी. का फासला तय कर वरघोड़ा कुशलधाम पहुंचा जहां भव्य समैया के साथ पदयात्रा संघ एवं साधु साध्वी का भव्य प्रवेश हुआ। पश्चात् प्रभु दर्शन गुरुदर्शन एवं चैत्यवंदन चतुर्विध संघ द्वारा किया गया। ट्रस्ट मंडल द्वारा संघपतियों एवं मणिधारी युवा परिषद् का साफा माला श्रीफल द्वारा अभिनंदन किया गया।

धर्मसभा का आयोजन : दोपहर में प्रवचन मंडप में धर्मसभा का आयोजन हुआ गुरुदेव श्री ने अपने उद्‌बोधन में संघयात्रा के महत्व के बारे में बताया।

संध्याकालीन भव्य आरती एवं भक्ति का आयोजन : रात में भव्य प्रभु एवं गुरुभक्ति का आयोजन हुआ सुरेश जी ओस्तवाल एण्ड ग्रुप ने अपने भक्ति गीतों से ऐसा समां बांधा की हर कोई झुमने पर मजबुर हो गया।

इस अवसर पर भारत भर से हजारों की संख्या में गुरुभक्त ब्रह्मसर धाम पधारे।

निर्माणाधीन पार्श्व पद्मावती धाम : कुशलधाम के पास ही गुरुदेव श्री की पावन एवं सानिध्य में निर्माणाधीन पार्श्व पद्मावती धाम के दर्शन एवं निर्माण कार्य का अवलोकन श्रद्धालुओं ने किया।

संघमाल महोत्सव का आयोजन : आज प्रवचन मंडाल में गुरुदेव एवं साध्वी वृंद की पावन निश्रा में संघमाल का आयोजन हुआ जहां पर इस संघयात्रा का लाभ लेने वाले लाभार्थी परिवारों का बहुमान एवं अभिनंदन आयोजन समिति द्वारा किया गया एवं संघवी पद एवं प्रशस्ति पत्र विधिपूर्वक प्रदान किया गया।

मदुराई में सेवा कार्य का आयोजन

मदुराई जैन अनुकंपा दान ग्रुप के तत्वावधान में आज मदुराई बाहरी एरिया सेवालयम आश्रम में 160 बच्चों को अल्पाहार कराया गया। संस्था के किशोर श्रीश्रीमाल ने बताया कि मदुराई जैन समाज की यह संस्था पिछले 11 साल से प्रत्येक रविवार को परोपकारी, जनकल्याण, गरीबों हित के कार्य के अंतर्गत नि:सक्त, गरीबों व वृद्धाश्रम, अनाथालय में जाकर कपड़ा, बर्तन, भोजन फल फ्रुट, जरूरत की वस्तुओं का दान कर रही है। इस अवसर पर जैन समाज के सक्रिय कार्यकर्ताओं में शांतिलाल गुलेच्छा, कांतिलाल पालगोता, जुगराज चौधरी, महेन्द्र हुंडिया, प्रवीण सुजाणी, संजय सेठिया, रमेश मुणोत आदि सदस्य मौजूद रहे।

यह संस्था में सकल जैन समाज मदुराई के श्रावक जुड़े हुए हैं। समय-समय पर सेवा कार्य में तन मन व धन से सहयोग दे रहें है मदुराई से दिनेश सालेचा।

केयुप, मुंबई शाखा द्वारा शिविर का अयोजन

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की मुंबई शाखा द्वारा दिनांक 30 एवं 31 दिसंबर को 8 से 22 वर्ष तक की आयु के बालक बालिकाओं के लिए दो दिवसीय ज्ञानवर्धक शिविर का आयोजन मुंबई के खरतरगच्छ संघ भवन, 1 ला पारसीवाडा में किया गया। परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वर म.सा. की प्रेरणा एवं शुभ आशीर्वाद से प.पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में आयोजित इस शिविर में 150 से अधिक बालक बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। इस शिविर में गुरुवर्या श्रीजी ने सभी शिविरार्थियों को विनय विवेक की व्यावहारिक एवं धार्मिक शिक्षा से अवगत कराया। धार्मिक ज्ञान, प्रश्नोत्तरी एवं गेम का सुन्दर संयोजन इस शिविर में किया गया था। रविवार 31 दिसम्बर को परिषद् द्वारा शिविर सहयोगियों का बहुमान एवं सभी शिविरार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर कुशल वाटिका बाड़मेर के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी छाजेड़, श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ सांचोर के अध्यक्ष श्री मांगीलालजी जैन, श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ मुंबई के पूर्व अध्यक्ष श्री मांगीलालजी शाह, श्री सांचोरी युवक मंडल के अध्यक्ष श्री प्रकाश जी मुणोत, श्री वर्धमान जैन परिषद् मुंबई के अध्यक्ष ललिताजी बोथरा, श्री मणिधारी युवा परिषद् के अध्यक्ष श्री पवनजी श्रीश्रीश्रीमाल सहित अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रीय महासचिव श्री प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल एवं राष्ट्रीय संयोजक (प्रचार-प्रसार) श्री धनपतजी कानुंगो, डॉ. श्रेय जैन समेत कई गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। मुंबई शाखा के अध्यक्ष चम्पालाल वाघेला ने सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए सभी शिविर सहयोगियों को धन्यवाद दिया, समस्त किट सहयोगी एवं शिविर सहयोगियों का मोमेंटो से बहुमान किया गया।

इस अवसर पर केयुप द्वारा मुद्रित कराये गए वर्ष 2018 के सुंदर केलेंडर का विमोचन मंचासीन महानुभावों द्वारा किया गया। शिविर में प्रथम तीन स्थानों पर आने वाले बच्चों को पुरस्कार दिए गए, सभी शिविरार्थियों को सुंदर उपहार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। मुंबई शाखा के सचिव महेन्द्र जैन ने पधारे हुए सभी महानुभावों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्री रावलमलजी जैन मणि का स्वर्गवास

हृदय विदारक घटना में दुर्ग के प्रख्यात साहित्यकार एवं श्री नगपुरा तीर्थ के संस्थापक श्री रावलमलजी जैन मणि का स्वर्गवास 1 जनवरी 2018 को हो गया। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास हो गया।

श्री रावलमलजी ख्यातिप्राप्त समाजसेवी थे। वे विधिकारक थे, वक्ता व लेखक थे। उनके स्वर्गवास से बहुत बडी क्षति हुई है, जिसकी क्षतिपूर्ति संभव नहीं है।

जहाज मंदिर परिवार उनके प्रति श्रद्धांजली अर्पण करता है। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति मिले।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य उपाध्याय प्रवर **श्री मनोज्ञसागरजी** म. **नयज्ञसागरजी** म. ब्रह्मसर में बिराजमान है। वे 10-15 दिन यहाँ बिराजेंगे।

पूज्य मुनि श्री **मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म.** मोक्षप्रभसागरजी म. मैत्रीप्रभसागरजी म. कल्पज्ञसागरजी म. ठाणा 5 पालीताना श्री जिनहरिविहार में बिराजमान है।

पूज्य मुनि **श्री मयंकप्रभसागरजी** म. **मेहुलप्रभसागरजी** म. फलोदी, मेडतासिटी आदि स्थानों पर ज्ञान भंडारों का अवलोकन व कार्य कर जोधपुर पधारे हैं। वे स्वास्थ्य लाभ हेतु जोधपुर दादावाडी में बिराज रहे हैं।

पूज्य मुनि **श्री मौनप्रभसागरजी** म. मननप्रभसागरजी म. ने पालीताना से मालपुरा की ओर विहार किया है।

पूज्य मुनि **श्री समयप्रभसागरजी** म. विरक्तप्रभ सागरजी म. श्रेयांसप्रभसागरजी म. नाकोडाजी तीर्थ के पास राजेन्द्र धाम में अध्ययन के लक्ष्य से बिराजमान है। नाकोडा ज्ञानशाला के प्राध्यापक श्री नरेन्द्रभाई कोरडिया उनके अध्ययन में पूर्ण योगदान अर्पण कर रहे हैं।

पू. महत्तरा पद विभूषिता **श्री दिव्यप्रभाश्रीजी** म. आदि ठाणा 7 पालीताना श्री जिनहरिविहार में बिराजमान है।

पूजनीया प्रवर्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा जयपुर पधार गये हैं।

पूजनीया गणिनी प्रवरा **श्री सुलोचनाश्रीजी** म. सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा चेन्नई में बिराजमान है। पूजनीया गणिनीजी म. का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने से अभी वे कुछ दिन चेन्नई में बिराजेंगे।

पूजनीया गणिनी प्रवरा **श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.** पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में मालेगांव में ता. 8 जनवरी 2018 को जिन मंदिर दादावाडी की 18वीं वर्षगांठ पर महोत्सव का आयोजन हुआ। पू.श्री 14 जनवरी को मालेगांव से विहार कर डोगराल, नेर तीर्थ, बलसाणा तीर्थ होते हुए दोंडाइचा पधारेंगे। वहाँ से 15 कि. मी. की दूरी पर घोटाण गांव में उनकी पावन प्रेरणा से श्री मणिधारी चंपा विहार धाम का भूमि पूजन होगा। यह ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व पू.श्री की प्रेरणा से इस क्षेत्र में तीसरा विहार धाम बनने जा रहा है।

पूजनीया मंडल प्रमुखा **श्री मनोरंजनाश्रीजी** म. सुभद्राश्रीजी म. शुभंकराश्रीजी म. आदि ठाणा ने 12 जनवरी को बकेला तीर्थ से विहार किया है। वे 14 जनवरी को कवर्धा पहुँचेंगे। वहाॅं से दाढी की ओर विहार की संभावना है।

पूजनीया माताजी म. श्रमणी रत्ना **श्री रतनमालाश्रीजी** म. पू. बहिन म. **डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी** म. आदि ठाणा 8 जहाज मंदिर पधारे। यहाँ शिविर के समापन के पश्चात् ता. 11 जनवरी 2018 को विहार कर गोल, ओटवाला, सायला, जीवाणा, सिणधरी होते हुए बाडमेर पधारेंगे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 20 जनवरी 2018 को कुशल वाटिका जिन मंदिर की 5वीं वर्षगांठ मनाई जायेगी।

पू. साध्वी **श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी** म. आदि ठाणा 4 मुंबई बिराज रहे हैं।

पूजनीया साध्वी **श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी** म. आदि ठाणा विहार कर पालीताना पधार गये हैं।

पूजनीया साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी** म. आदि ठाणा चौहटन से ब्रह्मसर संघ में पधारे। ब्रह्मसर से विहार कर बाडमेर होते हुए बालोतरा पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री कल्पलताश्रीजी** म. आदि ठाणा चौहटन से ब्रह्मसर संघ में पधारे। ब्रह्मसर से विहार कर बाडमेर होते हुए बालोतरा पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **डॉ. शासनप्रभाश्रीजी** म. आदि ठाणा 3 पालीताना से विहार कर सांचोर पधारे। वहाँ से विहार कर बाडमेर पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री प्रियस्मिताश्रीजी** म. आदि ठाणा 6 नेपाल पधारे हैं। नेपाल जाने वाले खरतरगच्छ के ये पहले साध्वीजी म. हैं। नेपाल में कुछ समय तक विचरण करेंगे। स्थान स्थान पर उनके प्रवचन, स्वाध्याय आदि का आयोजन किया गया है।

पू. साध्वी **श्री गुणरंजनाश्रीजी** म. की निश्रा में कादेडा में 8 जनवरी 18 को श्री भक्तामर महापूजन का आयोजन किया गया।

पू. साध्वी **श्री विरागज्योतिश्रीजी** म. **विश्व-ज्योतिश्रीजी** म. आदि ठाणा 3 पालीताना पधार गये हैं।

पू. साध्वी **श्री संघमित्राश्रीजी** म. अमीझराश्रीजी म. अमीपूर्णाश्रीजी म. की पावन निश्रा में स्व. श्री मूलचंदजी पुखराजबाई रूणवाल परिवार की ओर से नलखेडा से श्री मंडोदा पार्श्वनाथ तीर्थ के लिये छह री पालित पद यात्रा संघ का आयोजन हो रहा है। संघ प्रारंभ 24 जनवरी को होगा। माला महोत्सव 26 जनवरी 2018 को होगा।

पू. साध्वी **श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी** म. आदि ठाणा 3 बीकानेर से विहार कर अहमदाबाद पधार गये हैं।

पू. साध्वी **श्री श्वेतांजनाश्रीजी** म. ठाणा 2 श्री नाकोडाजी तीर्थ पर बिराजमान है।

दादावाडी संस्थापक अध्यक्ष भीकचंदजी को श्रद्धांजलि

दादावाडी प्रागंण में दादावाडी के संस्थापक अध्यक्ष भीकचंदजी छाजेड को भावभीनी श्रद्धांजली दी गई। सर्वप्रथम दादावाडी ट्रस्टी रमेश बाफना, पारसमल मांडोत, बाबुलाल संकलेचा, इन्द्रमल जैन, पूरन नाहटा ने भीकचंदजी की फोटो के आगे दीप जलाकर श्रद्धांसुमन अर्पित किये, तत्पश्चात 12 नवकार मंत्र का स्मरण कर श्रद्धांजली दी गई।

कार्यक्रम का संचालन करते दादावाडी ट्रस्ट कार्यकर्ता पुखराज कवाड ने कहाँ कि भीकचंदजी छाजेड जैसे विशाल व्यक्तित्व का परिचय देना पंडितो के सामने ग्रन्थ पढ़ना है। क्योकि वे समाज के हर छोटे बड़े के साथ सरलता से पेश आते थे। और समाज का हर व्यक्ति उनकी सेवा सें परिचित था। दादावाडी की नींव से ध्वजा तक उनका तन-मन-धन द्वारा सहयोग दिया गया।

ट्रस्टी मांगीलाल वैदमुथा ने कहा कि भीकचंदजी बहुत ही सरल व्यक्तित्व के धनी थे। पूर्व अध्यक्ष पारसमल चौपड़ा ने कहा कि भीकचंदजी जैसा व्यक्ति हुबली शहर में मिलना दुर्लभ है। जैन मरुधर संघ के दिनेशभाई संघवी ने कहाँ कि वे कई वर्षों से जैन मरुघर संघ में बतौर ट्रस्टी सेवाएं देते आ रहे थे हमे कभी नही लगा कि इनकी कथनी और करनी में अन्तर है। इसलिये पावन भूमि पर उनका मोक्ष हुआ। जिनकुशल महिला मंडल की अध्यक्ष पुष्पा बाफना ने कहाँ कि काकोसा के साथ मै भी छःरी पालक संघ में पालीतणा गयी थी यकिन नहीं हो रहा है कि वो आज नहीं है। दादावाडी ट्रस्ट सहकार्यदर्शी लालचंद टिमरेसा ने कहाँ कि भीकचंदजी जैसे व्यक्ति कभी मरते नही है वह हमेशा प्रेरणा देते जिन्दा रहते है

मनोज पोरवाल ने कहाँ कि भीकचंदजी का जाना समाज एवं दादावाडी के लिये गहरी हानि है। जिनकुशल युवा मंच मे पूर्व अध्यक्ष प्रकाश मांडोत, दादावाडी ट्रस्टी प्रकाश छाजेड सीवांची ट्रस्ट सहकार्यदर्शी विजय गोलेच्छा आदि ने भी अपने शब्दों द्वारा भीकचंदजी को श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर सुरेश छाजेड, खुशाल ओसवाल, रमेश कुमार ललवाणी, बाबुलाल संकलेचा, मोहनलाल बाफणा तथा विभिन्न समाज सेवी संस्थाओ के अग्रणी उपस्थित थे। अंत मे पुखराज कवाड ने सभी आगंतुको का आभार व्यक्त किया।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर एक घर में मेहमान बना था। मेजबान घटाशंकर उसे जानता न था, पर अपनी सहृदयता के कारण अपरिचित जटाशंकर को उसने अपने घर ठहराया था। अपना कक्ष उसे रहने के लिये दिया था।

भोजन करने के उपरान्त जटाशंकर सो गया था। साढे तीन बजे के आसपास उसकी आंख खुली। जलपान करके उसने कक्ष का निरीक्षण किया। सामने टेबल पर पडी टेबल घडी उसे बहुत अच्छी लगी। बडी गोलाकार घडी थी। काले बेक ग्राउण्ड में रेडियम युक्त अंकों की डिझाईन बहुत अच्छी लग रही थी।

उसने सोचा- दोपहर का समय है, सब सोये होंगे। यह घडी तो मैं ले ही लेता हूँ।

उसके विचारों में विकृति आ गई। घडी को उठाया और अपने थैले में डाल दिया। वह बाहर जाने के लिये उठा ही था कि घटाशंकर भीतर आया। नमस्कार करके सामान्य वार्तालाप करने लगा।

जटाशंकर को जाने की जल्दी थी। क्योंकि वह जानता था कि मैंने घडी चुराई है। इसकी नजर टेबल पर पडेगी तो संशय पैदा होगा। मगर वार्तालाप के चलते वह जा नहीं पा रहा था।

तभी घटाशंकर ने समय देखने के लिये टेबल की ओर नजरें घुमाई। घडी वहाँ न थी। कहाँ गई! वह कक्ष को टटोलने लगा। पर घडी नहीं मिली। मेहमान जटाशंकर से पूछना उसे ठीक तो न लगा, फिर भी उसने नम्र भाषा में पूछा- भाई साहब! आपने घडी कहीं देखी है।

जटाशंकर रोष भरे स्वरों में बोला- क्या कहते हैं आप! घडी तो मैंने देखी ही नहीं... लेने का तो सवाल ही नहीं उठता।

घटाशंकर बोला- भाई! मैंने लेने की बात नहीं कही है। केवल पूछा है। आप नाराज मत होइये। शायद दूसरे कक्ष में रख दी होगी। आप चिंता न करें।

जटाशंकर ने अपना थैला उठाया और बाहर की ओर कदम बढा दिये।

तभी थैले से अलार्म की आवाज आने लगी- टन... टन... टन... टन...। जटाशंकर घबरा गया। अलार्म ने उसकी पोल खोल दी थी। घडी में चार बजे का अलार्म लगा हुआ था।

घटाशंकर समझ गया कि घडी थैले में है। चोरी पकडी गई। जटाशंकर शर्मिन्दा हो गया। घडी ने स्वयं ही बता दिया कि वह कहाँ है!

गलती को छिपाने की लाख चेष्टा की जाये, तब भी प्रकट हो ही जाती है।

नव वर्ष का स्वागत सेवा कार्यों से

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के आशीर्वाद व प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् बैंगलोर शाखा के तत्वावधान में मानव सेवा कार्यक्रम के अन्तर्गत ठिठुरती सर्दी की रातों में फुटपाथों पर सोने वाले जरूरतमन्दों को कम्बल की पहली खेप का मध्यरात्रि में वितरण किया गया। युवा परिषद् अध्यक्ष ललित डाकलिया ने बताया कि नव वर्ष तक उच्च क्वालिटी के करीब 800 कम्बलों का वितरण किया जाएगा। मानव सेवा के इस पुनीत कार्य हेतु सभी सदस्यों का तन मन धन से सहयोग प्राप्त हो रहा है।

श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः श्री वासुपूज्यस्वामिने नमः श्री महावीरस्वामिने नमः

अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागरगुरुभ्यो नमः

श्री बालोतरा नगरे अम्बे वेली में
श्री वासुपूज्य जिन मंदिर की
भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा एवं
श्रीमती मोहिनी देवी के
जीवित महोत्सव प्रसंगे

सकल श्रीसंघ को भावभरा ससम्मान आमंत्रण

❖ पावन निश्रा ❖

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति

आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

आदि ठाणा

समारोह प्रारंभ
फाल्गुन वदि 30, गुरुवार
ता. 15 फरवरी 2018

भव्य शोभायात्रा
फाल्गुन सुदि 1, शुक्रवार
ता. 16 फरवरी 2018

प्रतिष्ठा
फाल्गुन सुदि 2, शनिवार
ता. 17 फरवरी 2018

❖ आयोजक ❖

मूंगडा निवासी शा. उम्मेदराजजी मिश्रीमलजी श्रीश्रीमाल परिवार

❖ समारोह स्थल ❖

अम्बे वेली कॉलोनी

बालोतरा- 344022 राज.

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

श्री बालोतरा नगरे
श्री केशरियानाथ जिनमंदिर अंजनशलाका प्रतिष्ठा महा महोत्सव

भावभरा हार्दिक आमंत्रण

पावन निश्रा

पूज्य गुरूदेव प्रज्ञा पुरूष आचार्य देव **श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वरजी म.सा.** के शिष्यरत्न
पूज्य गुरूदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर **श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**

महोत्सव प्रारंभ	शोभायात्रा	प्रतिष्ठा शुभ दिवस
फाल्गुन सुदी 2, शनिवार	फाल्गुन सुदी 5, मंगलवार	फाल्गुन सुदी 6, बुधवार
17.02.2018	20.02.2018	21.02.2018

हृदय के उछलते भावों से साग्रह निवेदन है कि इतिहास के अमिट लेख जिनमन्दिर जिर्णोद्धार, प्रतिष्ठा के इन शुभ पलों के साक्षी बनकर अपने शुभ भावों से पुण्य संचय करने के सुअवसर को अपने आगमन से अवश्य बधाऐं।
जिनशासन की शोभा में अभिवृद्धि करें।

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ केशरियानाथ मन्दिर ट्रस्ट
श्री केशरियानाथजी जिनमन्दिर अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

संभवनाथ मन्दिर दादावाड़ी, संभवनाथ चौक, बालोतरा - 344 022 (राज.)
सम्पर्क : 9414031395, 9414108101, 9414108860, 9414270702, 8949605267, 9929004220

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माँडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408